कैलासवास गौरीश ईश
तैलधारेयन्ते मनसु कोडॊ हरियल्लि ॥ प ॥

अहॊरात्रियलि नानु अनुजराग्रणियागि
महियोळगे चरिसिदेनॊ महादॆवने
अहिभूषणने एन्न अवगुणगळ एणिसदले
विहित धर्मदि विष्णु भकुतियनु कोडॊ शम्भॊ ॥

मनसु कारणवल्ल पापपुण्यक्केल्ल
अनलाक्ष निन्न प्रॆरणेयिल्लदे
दनुज गजमद वैरि दन्ड प्रणाममाळ्पे
मणिसॊ ई शिरव सज्जन चरण कमलदलि ॥

भागीरथीधरनॆ भयव परिहरिसय्य
लॆसागि नी सलहॊ सतत सर्वदॆवा
भागवतजन प्रिय विजय विठलन्घ्रि
जागु माडदे भजिप भाग्यवनु कोडॊ शम्भॊ ॥